Dr. Raj Gopal
Department of Philosophy

(vi) ज्ञान की प्रकृति आगमनात्मक है।

(vii) आदर्श ज्ञान भौतिक विज्ञानों में निहित ज्ञान है। इन विज्ञानों में सामान्य या सार्वभौम ज्ञान मिलता है, परन्तु इसमें अनिवार्यता नहीं होती है।

(3.) समीक्षावाद (Criticism) → समीक्षावाद वह ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त है जिसके अनुसार ज्ञान के साधन के रूप में न बुद्धि पर्याप्त है न अनुभव। ज्ञान प्राप्ति के लिए दोनों का समन्वय आवश्यक है। इस प्रकार से समीक्षावाद बुद्धिवाद तथा अनुभववाद दोनों की एकांगिकता को दूर कर दोनों में समन्वय स्थापित करने का प्रयास करता है। इनके अनुसार ज्ञान के लिए अनुभव और बुद्धि दोनों अनिवार्य है, परन्तु अपने आप में दोनों में से कोई पर्याप्त नहीं है।

काण्ट इन दोनों विरोधी विचारधाराओं में समन्वय करने का प्रयास करते हैं। उनके अनुसार ज्ञान की संरचना के लिए इन्द्रियअनुभव और बौद्धिक आकार दोनों अनिवार्य है। अनुभव ज्ञान का उपादान (Matter) है, और बौद्धिक कोटियाँ ज्ञान के प्रागनुभविक आकार है। इनमें से किसी भी घटक की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। अनुभववादियों के विपरीत, काण्ट विषय जगत की संरचना बुद्धि के अनुरूप मानता है। उनका मानना है कि ज्ञान का विषय ज्ञाता के ऊपर आश्रित है। ज्ञान न तो वस्तु केन्द्रित है और न ईश्वर केन्द्रित है बल्कि आत्म केन्द्रित है। वह बुद्धिवादियों के विपरीत ज्ञान की एकता का आधार ईश्वर को नहीं बल्कि आत्मा को मानता है। इनका मानना है कि मानव बुद्धि की संरचना प्राकृतिक जगत की संरचना के अनुरूप नहीं है। बल्कि प्राकृतिक जगत की संरचना बुद्धि की संरचना के अनुरूप होती है। इनका प्रसिद्ध कथन है "बुद्धि प्रकृति का निर्माण करती है।" इनके इस क्रान्तिकारी ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त को पाश्चात्य दर्शन में "कापरनिकन क्रांति" कहा जाता है। काण्ट के अनुसार ज्ञान (बुद्धि) प्राकृतिक जगत को उत्पन्न नहीं कर सकता, बल्कि उसके द्वारा प्रकृति के स्वरूप का निर्धारण किया जाता है। इस प्रकार ज्ञान का स्वरूप प्रागनुभविक है, बुद्धि विकल्पों का प्रयोग करके मानव बुद्धि ज्ञान वस्तुओं का स्वरूप अपने अनुरूप बना सकती है।

Scanned with CamScanner

बुद्धि अपनी कोटियों की सहायता से प्राकृतिक जगत से प्राप्त अस्त व्यस्त एवं बिखरे हुए संवेदनों को ग्रहण करके इन्हें व्यवस्थित एवं नियमित करती है। अतः कान्ट आनुभविक दृष्टि से यथार्थवादी और अतीन्द्रिय दृष्टि से प्रत्ययवादी है।

कान्ट के अनुसार ज्ञान में दो अंश होते हैं - सामग्री (Matter) तथा स्वरूप (Form) ज्ञान की सामग्री हमें अनुभव से प्राप्त होती है, परन्तु ज्ञान का स्वरूप बुद्धि से प्राप्त होता है। सामग्री मिट्टी है स्वरूप साँचा है। तो मृत्तिका को साँचे में डालकर ही हम विभिन्न प्रकार के ज्ञान प्राप्त करते हैं। कान्ट ने बतलाया है कि अनुभव ही ज्ञान का आरंभ है इसका अर्थ यह है कि ज्ञान संवेदनाओं से प्रारंभ होती है। इन इन्द्रियों संवेदनाओं को ज्ञान बनने के लिए बुद्धि विकल्प के साँचे में ढलना पड़ता है। बुद्धि में कुछ जन्मजात विकल्प होते हैं। बुद्धि इन विकल्पों के द्वारा असंबद्ध संवेदनाओं को सुसंबद्ध बनाती है। इसलिए कान्ट ने कहा है कि "इन्द्रिय संवेदनों के बिना बुद्धि विकल्प पंगु है, और बुद्धि विकल्प के बिना इन्द्रिय संवेदन अंधे हैं।

(1) "मानविक बुद्धि प्रकृति का निर्माण करती है" यह मत कान्ट का है। स्वयं में वस्तु जैसी होती है वह हमारे लिए अज्ञेय है। इन्द्रियों के संवेदन के माध्यम से हमें वस्तुओं का आभास होता है। बुद्धि उन्हीं संवेदनों को ज्ञान के रूप में परिणत करती है, ~~निर्मित~~ करती है। वास्तविक वस्तु हमारे लिये अज्ञात एवं अज्ञेय है।